SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् एवम् उत्तररामचरितम् में वर्णित राजाओं के कर्तव्य

हिमांशु कुमार, शोधार्थी, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
विनावाभावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
हिमांशु कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/02/2024
Revised on : -----
Accepted on : 04/04/2024
Overall Similarity : 04% on 27/03/2024

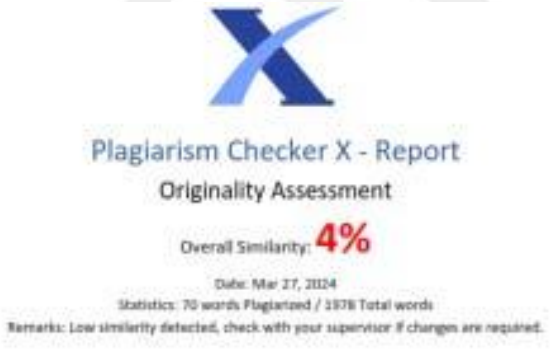

शोध सार

महाकवि भवभूति कृत रूपकों में राजा एवं उनके कर्तव्यों का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। भवभूति कृत तीन रूपकों की प्राप्ति होती है–महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् एवम् उत्तररामचरितम्। उक्त रूपकों में दो नाटक एवं एक प्रकरण है। महावीरचरितम् एवम् उत्तररामचरितम् नाटक है तथा मालतीमाधवम् प्रकरण है। महावीरचरितम् एवम् उत्तररामचरितम् में राजा का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है, उक्त दोनों नाटकों में राजा के कार्यों उनकी प्रजा के प्रति कर्तव्यों का उल्लेख प्राप्त होता है जैसे– उत्तररामचरितम् में जब राजा राम को ज्ञात होता है कि उनके राज्य में एक ब्राह्मण बालक की असमय मृत्यु का कारण शम्बुक नामक शुद्र तपस्वी है तो वह स्वयं उस शम्बुक का वध करने हेतु प्रस्थान करते हैं। वहीं महावीरचरितम् में राम जब विश्वामित्र के साथ उनकी रक्षा हेतु जाते हैं और राक्षस जन जब उनपर आक्रमण कर देते हैं तब राम स्त्री राक्षसी को देखकर उनका वध नहीं करना चाहते हैं। यहाँ राम के अन्दर विद्यमान स्त्री एवं बच्चों की रक्षा संबंधित राजा के कर्तव्य बोध होता है। वहीं महावीरचरितम् में जनक कहते हैं कि यदि यह (परशुराम) ऋषि है तो इन्हें आसन पाद्य अर्ध्य दिये जाएँ, उसके पश्चात् श्रोत्रियोचित मधुपर्क दिया जाए किन्तु यदि शत्रु हैं और हमारे पुत्ररूप धन पर बुरी दृष्टि रखते हैं तो इस अनैतिक जनपर धनुष का प्रयोग हो। इस प्रकार राजा के कर्तव्यों का कथन महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में किया है।

मुख्य शब्द

शताब्दी, ब्रह्मवादी, पूर्वार्द्ध, कर्तव्यनिष्ठा, चित्रित, हृदयस्पर्शी.

प्रस्तावना

महाकवि भवभूति संस्कृत रूपककारों में करूण रस हेतु प्रशंसनीय हैं। इन्होंने उत्तररामचरितम् में करूण रस का जो ह्रदयस्पर्शी प्रयोग किया है,जिसके कारण आलोचकों ने कहा है– उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। कश्मीरी पण्डित कल्हण द्वारा 1158–59 में रचित राजतरङ्गिनी में उन्होंने कर्कोटवंशीय ललितादित्य मुक्तापीड की कान्यकुब्जेश्वर यशोवर्मा पर विजय का उल्लेख किया है। इन्हीं यशोवर्मा के आश्रय में भवभूति एवं गउडवहो के कर्ता वाक्पतिराज कवि थेः

कविर्वाक्पतिराजश्रीर्भवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणैःस्तुतिवन्दिताम्।[१]

कल्हण के अनुसार भवभूति का समय आठवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध होना चाहिए। भवभूति ने स्वयं एवं अपने कुल जन्म स्थान आदि के विषय में अपने रूपकों में संकेत कर रखा है।[२]

महाकवि भवभूति कृत तीन रूपकों की प्राप्ति होती है। महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् एवम् उत्तररामचरितम्। उक्त रूपकों में महावीरचरितम् एवं उत्तररामचरितम् नाटक(रूपकों का एक भेद) की श्रेणी में आते हैं। वहीं मालतीमाधवम् प्रकरण (रूपकों का एक भेद) की श्रेणी में आता है। रूपकों के उक्त भेद नाटक एवं प्रकरण पर विचार करते हुए आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में उनका लक्षण प्रस्तुत किया है। नाटक का लक्षणः

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसंधिसमन्वितम्।
विलासद्धर्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभैः।।
सुखदुःखसमुद्भूति नानारसनिरन्तरम्।
पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः।।
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणावान्नायको मतः।।
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणोऽद्भुतः।।
चत्वारः पञ्च वा मुख्याः कार्यव्यापृतपूरुषाः।
गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनं तस्य कीर्तितं।। ३

प्रकरण का लक्षणः

भवेत्प्रकरणो वृत्तं लौकिकं कविकल्पितं।।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।
सापायधर्मकामार्थपरो धीर शान्तकः।।
नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्।
तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः।।
कितवद्यूतकारादिविटचेटकसंकुलः।[४]

उक्त लक्षणों को देखने से ज्ञात होता है कि नाटक का नायक प्रख्यातवंश में उत्पन्न होना चाहिए,राजर्षि हो, धीरोदात्त प्रकृति का नायक हो और प्रतापवान् हो। यहाँ धीरोदात्त का अर्थ है अविकत्थन अर्थात् जो नायक अपनी प्रशंसा न करे, क्षमायुक्त, अति गम्भीर स्वभाववाला हो, महासत्त्व अर्थात् हर्ष शोकादि से अपने स्वभाव को नहीं बदलनेवाला, स्थिर–प्रकृति, विनय से प्रच्छन्न गर्व रखनेवाला और दृढव्रत अपनी वाणी का सम्मान करने वाला पुरुष श्धीरोदात्तश् कहलाता है।[५] वहीं प्रकरण का नायक विप्र, अमात्य अथवा वणिक् होता है।

राजा के कर्तव्यों का वर्णन धर्मशास्त्रों में भली प्रकार से किया गया है। यथा– कौटिलीय अर्थशास्त्र में राजा

के कर्तव्य को चित्रित करते हुए कहा गया है कि, राजा के उन्नतिशील होने पर ही उसका सारा भृत्यवर्ग उन्नतिशील होता है। इसके विपरीत राजा के प्रमादी होने पर सारा भृत्यवर्ग प्रमाद करने लगता है। उस परिस्थिति में वह प्रमाद से युक्त भृत्यवर्ग राज्यकार्यों के प्रति विमुख हो जाता है और ऐसा राजा शत्रुओं के धोखे में आ जाता है इसलिए राजा के लिए उचित है कि वह अपने आपको सदा ही उन्नतिशील बनाये रखे। राजकार्य को व्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए वह दिन और रात को आठ घड़ियों में बाँट दे । वह राजा पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में राजा रक्षा–संबंधी कायों का निरीक्षण करे और बीते हुए दिन के आय–व्यय की जाँच करे। दूसरे भाग में वह पुरवासियों तथा जन– पदवासियों के कार्यों का निरीक्षण करे। तीसरे भाग में स्नान, भोजन तथा स्वाध्याय करे और चौथे भाग में बीते दिन की अवशिष्ट धन को संभाले तथा उसी भाग में विभिन्न कार्यों पर अध्यक्ष आदि की भी नियुक्ति करे। उत्तरार्ध के पाँचवें भाग में वह मंत्रि–परिषद् के परामर्श से पत्र भेजे तथा आवश्यक कार्यों के संबंध में विचार– विनिमय करे । इसी समय वह गुप्तचरों के कार्यों एवं गुप्त बातों के संबंध में जाने– सुने । छठे भाग में वह स्वतंत्र होकर स्वेच्छा से विहार तथा विचार करे। सातवें भाग में वह हाथी, घोड़े, रथ तथा अस्त्र–शस्त्रों का निरीक्षण करे। अंतिम आठवें भाग में वह सेनापति के साथ युद्ध आदि के संबंध में विचार–विमर्श करे। दिनांत के बाद वह संध्योपासन करे। इसी प्रकार रात्रि के पहिले भाग में वह गुप्तचरों को देखे । दूसरे भाग में स्नान, भोजन, स्वाध्याय, तीसरे भाग में संगीत सुनता हुआ शयन करे और चौथे पाँचवें भाग तक सोता रहे। रात्रि के छठे भाग में संगीत के द्वारा जागा हुआ वह अर्थशास्त्रसंबंधी तथा दिन में संपादित किये जाने योग्य कार्यों पर विचार करे। सातवें भाग में गुप्त–मंत्रणा करे और गुप्तचरों को यथास्थान भेजे। रात्रि के अंतिम आठवें भाग में ऋत्विक, आचार्य तथा पुरोहित के साथ स्वस्तिवाचन सहित आशीर्वाद ग्रहण करे। इसी समय वह वैद्य, प्रधान रसोइयों और ज्योतिषी आदि से भी तत्संबंधी बातों पर परामर्श करे। इन सब कार्यों से निवृत हो वह बछड़े वाली गाय और बैल की प्रदक्षिणा करके राजमहल में प्रवेश करे।[६] इस प्रकार कौटिल्य ने राजा के कार्यों का संपादन किया है, प्रजा के प्रति राजा के कर्तव्य को उल्लेखित करते हुए वह कहते हैं कि:

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रिय हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्।[७]

अर्थात् प्रजा के सुख में राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही राजा का हित है। स्वयं को अच्छे लगने वाले कार्यों के संपादन से प्रजा सुखी नहीं होती बल्कि प्रजा को अच्छे लगने वाले कार्यों के संपादन में ही राजा का हित होता है।

कौटिलीय अर्थशास्त्र के अतिरिक्त मनुस्मृति में भी महर्षि मनु ने राजा के कर्तव्यों का उल्लेख किया है–

कार्ये सोऽवेक्ष्य शक्तिं च देशकालौ च तत्वतः।
कुरुते धर्मसिद्धयर्थं विश्वरूपं पुन पुनः।[८]

अर्थात् राजा प्रयोजनलके कार्य, अपनी शक्ति और देश तथा काल को भलीभाँति विचार कर राजा धर्म के लिये विविध रूप धारण करता है।

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते।
कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते।[९]

यहाँ कहा गया है कि यदि राजा भलीभाँति विचारकर दंड देता है तो उस राजा को धर्म, अर्थ और काम की वृद्धि होती है, और जो राजा, नीच, कामी और अनुचित दंड देनेवाला होता है तो वह उसी दंड से मारा जाता है। इस प्रकार राजा के कर्तव्यों का उल्लेख उक्त ग्रन्थों में किया गया है।

भवभूति कृत नाटकों महावीरचरितम् एवम् उत्तररामचरितम् के नायक राम हैं, जो अयोध्या के राजा हैं, वहीं मालतीमाधवम् प्रकरण के नायक अमात्य हैं। यहाँ नायक धीरप्रशान्त श्रेणी में आता है।

महावीरचरितम् में वर्णित राजा एवं उसका कर्तव्य– प्रस्तुत नाटक में विविध राजाओं के नाम आते हैं:

दशरथः ये अयोध्या के राजा एवं राम, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न के पिता हैं।

जनकः ये विदेहराज हैं तथा सीता के पिता हैं।

रावणः ये लङ्का एवं राक्षसों के राजा हैं, साथ ही शूर्पणखा, विभीषण एवं कुम्भकर्ण के बड़े भाई भी हैं।

बालीः ये किष्किन्धा एवं वानरों के राजा हैं, साथ ही सुग्रीव के बड़े भाई हैं।

प्रसङ्ग के अनुसार जब परशुराम आते हैं, तब राजा के कर्तव्य का उल्लेख करते हुए जनक कहते हैं:

ऋषिरयमतिथिश्चेद्विष्टरः पाद्यमर्घ्यं
तदनु च मधुपकः कल्प्यतां श्रोत्रियाय।
अथ तु रिपुरकस्माद्वेष्टि नः पुत्रभाण्डं
तदिह नयविहीने कार्मुकस्याधिकारः।।[१०]

अर्थात् जनक कहते हैं कि यदि यह ऋषि है तो इन्हें आसन पाद्य अर्घ्य दिये जाएँ, उसके पश्चात् श्रोत्रियोचित मधुपर्क दिया जाए, किन्तु यदि शत्रु हैं और हमारे पुत्ररूप धनपर बुरी दृष्टि रखते हैं तो इस अनैतिक जनपर धनुष का प्रयोग हो ।

जब राजा या उनके पुत्रों के द्वारा कोई गलती हो जाती है तो वे क्षमा याचना करते हुए कहते हैं, जैसे इस नाटक में शिवधनुष तोड़ने पर क्रोधित हुए परशुराम से क्षमायाचना करते हुए कहते हैं– ब्रह्मवादी ऋषिगण आपके चरणों की वन्दना किया करते हैं और आप विद्या तथा तपस्या में वरिष्ठ है, संयोगवश मैंने आपके प्रति जो अविनय व्यवहार किया, उसके लिये मैं करबद्ध क्षमा याचना करता हूँ, आप क्षमा करें ओर मेरे प्रति प्रसन्न हों।[११]

जब शत्रु आक्रमण करता है तो राजा का कर्तव्य है कि अपनी प्रजा की रक्षा करे– राम जब वानर सेना के साथ लङ्का पर आक्रमण करते हैं तब नेपथ्य से प्रजा को कहा जाता है कि शीघ्र दरवाजे बन्द करके उसमें लोहे की कीलें बन्द कर लो, उसके ऊपर अस्त्रों को ठीक करके रखो, अपने बाल–बच्चों का ध्यान रखो, शान्तस्वभाव बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ों की रक्षा करो, खाद्यान्न पर ध्यान दो।[१२]

इस प्रकार महावीरचरितम् में राजा एवं उनके कर्तव्य को चित्रित किया गया है।

उत्तररामचरितम् में राजा एवं उनका कर्तव्य

महाकवि भवभूति कृत इस नाटक के नायक राजा राम हैं। इस रूपक में वाल्मीकि रामायण में वर्णित उत्तरकाण्ड की घटना को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत रूपक में राजा के रूप में राम एवं जनक का उल्लेख आता है। इस नाटक में राजा के कर्तव्यों को विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है। अष्टावक्र जब वशिष्ठ ऋषि का दूत बनकर राजा राम के समीप आते हैं और जब अष्टावक्र, वशिष्ठ की चिन्ता को राम के समीप प्रकट करते हैं और कहते हैं कि– हम लोग जामाता (ऋष्यश्रृङ्ग) के यज्ञ के कारण उनके आश्रम में रुके हुए हैं। तुम बालक ही हो और राज्य नया है, इसलिए प्रजा के अनुरञ्जन में तत्पर होओ। उससे यश होगा, जो आप रघुवंशी लोगों का उत्कृष्ट धन है।[१३]

इसके उत्तर में राम राजा के रूप में प्रजा के प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठा को व्यक्त करते हुए कहते है:

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।[१४]

अर्थात् प्रजा–वर्ग के अनुञ्जन के लिये प्रेम, दया, सुख अथवा जनक की पुत्री अर्थात् सीता को भी छोड़ते हुए मुझे पीडा न होगी अर्थात् प्रजा की प्रसन्नता के लिये मैं बड़ा से बड़ा बलिदान कर सकता हूँ ।

जनता के विचारों को जानने के लिए राजा के द्वारा गुप्तचर नियुक्त किए जाते हैं। प्रस्तुत नाटक में राजा राम

ने जनता के विचारों को जानने के लिए दुर्मुख नामक व्यक्ति को गुप्तचर के रूप में नियुक्त किया था, वह राजा के समीप उपस्थित होकर नगरवासियों एवं ग्रामवासियों के विचारों को प्रकट करता है। गुप्त सूचनाओं को सुनकर राम कहते हैं कि:

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
तत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणांश्च मुञ्चता।।[१५]

अर्थात् किसी भी कार्य से जनता को प्रसन्न रखना सज्जन राजाओं का व्रत है, जो व्रत पिता के द्वारा प्राणों को छोड़ते समय, मेरे द्वारा (पिता की आज्ञा पर वन गमन) पुरा किया गया है।

इस प्रकार इस नाटक में राजा के कर्तव्यों को चित्रित किया गया है।

मालतीमाधवम् में वर्णित राजा एवं उनके कर्तव्य– प्रस्तुत रूपक में दो राजाओं का उल्लेख हुआ है– १) विदर्भ देश का राजा, २) पद्मावती देश का राजा। इस रूपक में केवल राजाओं का उल्लेख है किन्तु जनता के प्रति उनके कर्तव्यों का उल्लेख नहीं किया गया है, इस रूपक के केवल यही प्राप्त होता है कि पद्मावती देश के राजा के कहने पर भूरिवसु जो उसका मन्त्री है, अपनी पुत्री का विवाह नन्दन के साथ कराने पर सहमत हो जाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में राजा के कर्तव्यों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। राजा का परम कर्तव्य है कि वह अपने राज्य में रहने वाली प्रजा के हित में कार्य करे और प्रजा को सदैव प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिए।प्रजा के सुख में राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही राजा का हित है क्योंकि स्वंय को अच्छे लगने वाले कार्यों के संपादन से प्रजा सुखी नहीं होती बल्कि प्रजा को अच्छे लगने वाले कार्यों के संपादन में ही राजा का हित होता है। उत्तररामचरित में जनता के सुख के लिए राम ने अपनी पत्नी सीता का भी त्याग कर दिया।इस प्रकार भवभूति ने राजा के कर्तव्यों का उल्लेख भली प्रकार से अपने रूपकों में किया है।

सन्दर्भ सूची

१. श्लोक संख्या–१४४,चतुर्थ तरङ्ग, कल्हण कृत राजतरङ्गिनी।
२. प्रस्तावना, मालतीमाधवम् एवं उत्तररामचरितम् एवं महावीरचरितम्।
३. कारिका संख्या–७–११, षष्ठ परिच्छेद, साहित्यदर्पण।
४. कारिका संख्या–२२४–२२६, षष्ठ परिच्छेद, साहित्यदर्पण।
५. कारिका संख्या–२२४–२२६, तृतीय परिच्छेद, साहित्यदर्पण।
६. गैरोला, वाचस्पति, कौटिलीय अर्थशास्त्र, पेज नं०–६१–६२, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
७. गैरोला, वाचस्पति, कौटिलीय अर्थशास्त्र, श्लोक संख्या–०२, अष्टादश अध्याय, प्रथम अधिकरण, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
८. श्लोक संख्या–१०, सप्तम अध्याय, मनुस्मृति।
९. श्लोक संख्या–२७, सप्तम अध्याय, मनुस्मृति।
१०. श्लोक संख्या–४४, द्वितीय अङ्क,महावीरचरितम्।
११. श्लोक संख्या–२१, चतुर्थ अङ्क,महावीरचरितम्।
१२. श्लोक संख्या–१६, षष्ठ अङ्क,महावीरचरितम्।
१३. श्लोक संख्या–११, प्रथम अंक, उत्तररामचरितम्।
१४. श्लोक संख्या–१२, प्रथम अंक, उत्तररामचरितम्।
१५. श्लोक संख्या–४१, प्रथम अंक, उत्तररामचरितम्।

****